नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

'उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन : समस्याएं एवं चुनौतियां' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन

शिक्षा का अभिन्न संबंध समाज से हों - शरदचंद्र बेहार

हिंदी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, नैक, आईक्यूएसी का आयोजन

वर्धा, 19 मार्च 2016: शिक्षा के अंतिम उद्देश्यों का धरातल पर उतारकर उसका सीधा संबंध समाज के साथ जोड़ना चाहिए। शिक्षा के अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर शिक्षा के नए मॉडल को विकसित करना चाहिए और उसका नेतृत्व महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय को करना चाहिए। उक्त बातें पूर्व कुलपति एवं पूर्व शिक्षा सचिव शरदचंद्र बेहार ने रखी। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद, नैक बैंगलूरु द्वारा प्रायोजित तथा विवि के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन में समस्याएं एवं चुनौतियां विषय पर दो दिवसीय (19 एवं 20 मार्च) राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन के अवसर पर बतौर बीज वक्ता के रूप में बोल रहे थे। राष्ट्रीय संगोष्ठी का उदघाटन शनिवार, 19 को कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में हबीब तनवीर सभागार में हुआ। इस अवसर पर मंचपर दिल्ली विवि में अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के प्रो. आनंद प्रकाश, प्रो. रमाचरण त्रिपाठी, इलाहाबाद, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विश्वविद्यालय, नागपुर के मनोविज्ञान विषय के पूर्व प्रोफेसर सी. जी. पांडे, विवि के कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र तथा गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ. शोभा पालीवाल उपस्थित थे।

शरदचंद्र बेहार ने आज की शिक्षा पद्धति और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हस्तक्षेप की बात करते हुए आगे कहा कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था प्रतियोगिता पर आधारित हो गयी है। दूसरों के पास जो है उसकी आवश्यकता न होते हुए भी उसे हासिल करने के लिए हम दौड़ते जा रहे है। शिक्षा के माध्यम से पश्चिमी देश हमें अपना अनुयायी बना रहे हैं और इसी बहाने से साम्राज्यवाद को थोपा जा रहा है। उन्होंने कहा कि अच्छे इंसान बनाने के लिए शिक्षा का मॉडल बनाने की आवश्यकता है।

अध्यक्षीय उदबोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि शिक्षा में पश्चिम का वर्चस्व बना रहे ऐसी व्यवस्था बन रही है। गुणवत्ता संवर्धन के लिए उपायों की चर्चा करते हुए उनका कहना था कि विषयों को प्रासंगिक बनाया जाए और अपनी गुणवत्ता को हम खूद ही प्रतिष्ठापित करें। उन्होंने शिक्षा में मूल्यों का प्रश्न उपस्थित करते हुए चिंता जताई कि शिक्षा की मौजूदा प्रक्रिया में

अनेक संकट है और सामान्य शिक्षा में इससे उबरने का रास्ता नहीं है।

प्रो. आनंद प्रकाश ने विषय प्रवर्तन करते हुए उच्च शिक्षा की गुणवत्ता का प्रश्न और चुनौतियों को लेकर अपनी बात पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से रखी। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार हमारे देश में ग्रेजुएट का एनरोलमेंट रेशो तीस प्रतिशत होना चाहिए जो मात्र 13 से 18 प्रतिशत है। इसे 2025 तक हासिल करने के लिए देश में आठ हजार विश्वविद्यालय और लगभग 40 हजार नए महाविद्यालयों की जरूरत हैं। विश्वविद्यालय के लिए नवाचार और कौशल विकास जैसी योजनाओं को लाया जा रहा है और इसे सरकार के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय मानक एजंसियां भी बढ़ावा दे रही हैं। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा में गुणवत्ता संवर्धन के लिए विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की प्लेसमेंट, विवि की पहूंच, समाज के साथ संम्बद्धता और सवालों केंद्रित अनुसंधान आदि बातों को ध्यान में रखकर गुणवत्ता के मानक निर्धारित किए जा रहे हैं।

प्रो. सी. जी. पांडे का कहना था कि हम विद्यार्थी को परीक्षार्थी बना रहे हैं और इससे गुणवत्ता पर ही प्रश्नचिन्ह लग गया है। भारतीय संविधान में शिक्षा की जो व्याख्या की गयी है, उसके अनुसार हमें मूल्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा के अंदाधुंद निजीकरण से मूल्य का संकट पैदा हुआ है और गुणवत्ता बाधित हुई है।

प्रो. रमाचरण त्रिपाठी ने कहा कि पूरे विश्व में वैश्विकरण, बाजारीकरण और पूंजीवाद जारी है और शिक्षा व्यवस्था भी इसकी चपेट में है। उन्होंने विश्वविद्यालयों को अधिक स्वायत्तता देने की बात करते हुए कहा कि इससे गुणवत्ता बढ़ेगी और वैभिन्य की आज़ादी भी मिलेगी।

इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों ने स्मारिका का लोकार्पण किया। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। शिक्षा विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर अप्रमेय मिश्र ने वैष्णव जन तो... भजन प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय का कुलगीत भी समारोह के प्रारंभ में प्रस्तुत किया गया। अतिथियों का चरखा, खादी-माला और शॉल से स्वागत किया गया। कार्यक्रम का संचालन आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ की समन्वयक डॉ. शोभा पालीवाल ने किया तथा आभार कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने माना। उदघाटन कार्यक्रम में कुलानुशासक प्रो. सूरज पालीवाल, शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. के. के. सिंह, विद्यार्थी कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार राय, अनुवाद अध्ययन विभाग की अध्यक्ष डॉ. अन्नपूर्णा सी., विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, प्रियदर्शनी महिला महाविद्यालय, वर्धा के सहायक प्रोफेसर धनंजय सोनटक्के, विवि के सहायक प्रोफेसर राकेश मिश्र, ऋषभ मिश्र, संदीप सपकाले, अमित राय, अमरेंद्र शर्मा, अरूण प्रताप सिंह आदि सहित विवि के अध्यापक, विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों से आए प्रतिभागी, शोधार्थी तथा विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

‘उच्च शिक्षणात गुणवत्ता वाढीच्या समस्या आणि आव्हाने’ या विषयावर राष्ट्रीय चर्चासत्राचे उदघाटन

शिक्षणाचा अभिन्न संबंध समाजाशी असावा - शरदचंद्र बेहार

हिंदी विश्वविद्यालयात दोन दिवसीय राष्ट्रीय चर्चासत्र, नॅक, आयक्यूएसीचे आयोजन

वर्धा, 19 मार्च 2016: शिक्षणाचे अंतिम उद्देश्य साध्य करण्यासाठी शिक्षणाचा थेट संबंध समाजाशीच असला पाहिजे. शिक्षणाचे आंतरराष्ट्रीय पटल लक्षात घेत नवे मॉडल विकसित केले पाहिजे आणि त्याचे नेतृत्व महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाने केले पाहिजे असे मत माजी कुलगुरु आणि माजी शिक्षण सचिव शरदचंद्र बेहार यांनी व्यक्त केले. ते महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात राष्ट्रीय मूल्यांकन आणि प्रत्यायन परिषद, नॅक बैंगलूरु द्वारा प्रायोजित तथा विविच्या आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित उच्च शिक्षणात गुणवत्ता वाढीच्या

समस्या आणि आव्हाने या विषयावरी राष्ट्रीय चर्चासत्राच्या उदघाटन कार्यक्रमात बोलत होते. कुलगुरु प्रो. गिरीश्वर मिश्र यांच्या अध्यक्षतेखाली शनिवारी हबीब तनवीर सभागृहात चर्चासत्राचे उदघाटन झाले. यावेळी दिल्ली विवितील आंतरराष्ट्रीय संबंध विभागाचे प्रो. आनंद प्रकाश, अलाहाबादचे प्रो. रमाचरण त्रिपाठी, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज विद्यापीठ, नागपूरच्या मनोविज्ञान विषयाचे माजी प्रमुख प्रो. सी. जी. पांडे, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र तथा गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठच्या समन्वयक डॉ. शोभा पालीवाल मंचावर उपस्थित होते.

अध्यक्षीय भाषणात प्रो. गिरीश्वर मिश्र म्हणाले की पाश्चिमात्य देशांचे वर्चस्व राहील अशी शिक्षण व्यवस्था तयार होत आहे. गुणवत्ता वाढीच्या समस्या उच्च शिक्षणात मोठया प्रमाणात वाढल्या आहेत. त्यासाठी शिकविले जाणारे विषय प्रासंगिक असले पाहिजे असे सांगून ते म्हणाले की आपली गुणवत्ता आपणच स्थापन केली पाहिजे. प्रो. आनंद प्रकाश म्हणाले की आंतरराष्ट्रीय मानदंडानुसार देशातील पदवी प्रवेशाचा दर तीस टक्के असायला पाहिजे जो सध्या केवळ 13 ते 18 टक्केच आहे. 2025 पर्यंत हे लक्ष्य प्राप्त करण्यासाठी देशात जवळपास आठ हजार विद्यापीठे आणि 40 हजार महाविद्यालयांची गरज आहे. प्रो. सी. जी. पांडे म्हणाले की आम्ही विद्यार्थी नव्हे तर परीक्षार्थी तयार करत आहोत आणि त्यामुळे गुणवत्ता वाढीच्या समस्या उदभवत आहेत. भारतीय घटनेनुसार शिक्षणातून मूल्य शिक्षण दिले पाहिजे या बाबींवर अतिरिक्त भर देण्याची आवश्यकता आहे असेही ते म्हणाले. प्रो. रमाचरण त्रिपाठी यांनी विश्वविद्यालयांना अधिक स्वायत्तता दिली पाहिजे असे सांगितले. यावेळी स्मरणिकेचे लोकार्पण करण्यात आले. अप्रमेय मिश्र यांनी वैष्णव जन तो... हे भजन सादर केले. पाहुण्यांचे चरखा, खादी-माळ आणि शाल देवून स्वागत करण्यात आले. संचालन डॉ. शोभा पालीवाल यांनी केले तर आभार डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र यांनी मानले. यावेळी प्रो. सूरज पालीवाल, प्रो. अरबिंद कुमार झा, प्रो. के. के. सिंह, प्रो. अनिल कुमार राय, डॉ. अन्नपूर्णा सी., डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, प्रियदर्शनी महिला महाविद्यालयाचे सहायक प्रोफेसर धनंजय सोनटक्के, राकेश मिश्र, ऋषभ मिश्र, संदीप सपकाले, अमित राय, अमरेंद्र शर्मा, अरूण प्रताप सिंह यांच्यासह अध्यापक, विविध विद्यापीठे आणि महाविद्यालयातून आलेले प्रतिनिधी, विद्यार्थी मोठया संख्येने उपस्थित होते.